सं. द्यो. वि./झम्बाला/46-85/23938.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मैनेजिंग डायरेक्टर दी झम्बाला सैन्द्रल कोझाप्रेटिव बैंक लि., झम्बाला कहर, के श्रमिक परमजीत कौर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वां नीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रम, श्रीक्षोगिक विवाद श्रीविनियम. 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खुष्ट (ग) द्वारा प्रदान की गई क्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीविसूचना सं. 3(44)84—3—अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रीविनियम की घारा 7 के श्रीविन गठित अम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे सिक्वा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्विष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या परमजीत कौर की सेवाओं का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत की हुक्सर है ?

सं भो वि । रोहतक | 46-85 | 23966. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैं अरोड़ा मेटल कम्पनी हिसार रोड, रोहतक, के श्रमिक राम देवी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्रोगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल दिवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाण के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी भिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ०(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्रीमती राम देवी की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं. मो. वि./रोहतक/44/23973.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. अरोड़ा मेटल लि., हिसार रोड, रोहतक, के श्रीमक श्रीमती जगो तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की द्यारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कान्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधमुचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीधसूचना सं. 3864-ए-एस-श्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त श्रीधनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यार्थानणंय हेतू, निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री मती जग्गो की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त की हकदार है ?

सं.मो.वि./रोहतक/45-85/23980.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. अरोड़ा मेटल लि०, हिसार रोड़, रोहतक, के श्रमिक श्री मती माया देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना वास्नीय समझते हैं;

इसलिये, अब, और्छोगिक विवीद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारी (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शक्तियों का अयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5641-1-अम/ 70/32573; दिनांक 6 नंबम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3064-ए:एस.ओ.(ई)अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालिय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

वयी श्रीमती माया देवीं की सेवाग्रों का समापत स्यायीचित तथा ठीकं है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की इंकदार है ?

सं. ग्रो.वि./पानीपत/30-84/23987.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगड़, (2) क्षायंकारी अभियन्ता, सिविल नं0.1 पानीपत पर्मल पावर प्रोजैक्ट, हरियाणा, राज्य विजली बोर्ड आसन (पानीपत) (3) मुख्य अभियन्ता धर्मल पावर प्रोजैक्ट हरियाणा राज्य विजली बोर्ड आसन (पानीपत), के श्रमिक श्री नायव सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल निवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिशिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, प्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की 'उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रवीन गठित श्रम न्यायालय, प्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिन्णंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा संबंधित मामला है:—

वया श्री नायव सिंह की सेवामी का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है?

सं. मो. वि./एफ. डी./26-85/23995.—र्जूकि हरियाणा के शाज्यपाल की राय है कि मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद कम्पलैक्स एन. ग्राई. टी. फरीदाबाद के व्यक्ति श्रीमती निर्मला दाहमें तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके काद निवित्त वान्नों में कोई श्रीकोपिक विवाद है;

भीर चूंकि इरियाना के राज्यपास विकास को न्यायनिर्णय हेतू निविध्द करना बाछनीय समझते हैं ;

इसंतिए, अब, भीवोधिक विवार अधिनियम, 1947, की आरा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (य) द्वारा प्रवान की वई प्रतिस्थीं का प्रयोग करते हुए, इरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3-अम/68/15254, विनोक 20 जून, 1968, के सान पढ़ते हुए अधिसचना सं. 11495—जी-श्रम—57/11245, विनोक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदावाद, की विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे क्षिया भावता न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मा उस से युसंगत का उससे संबंधित मानवा है :—

क्या श्रीमती निर्मेला दाहमें की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनियाँय हेतू निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रव, प्रोक्षोनिक विवाद प्रविनियंग, 1947, की घारा 10 की उपवारा (1) के बच्च (य) द्वारा प्रवान की नई कवित्वों का प्रवोग करते हुये हरियाना के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रविस्तृत्वना सं 0 3(44)--84-3 श्रम, दिवोक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उस्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रंधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय ने लिए बिर्विष्ट करते हैं, जो कि उन्ते प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगेत ग्रंपवा सम्बन्धित मामला है :—

नेयां श्री कमल कुमार की सेवाधीं का संमापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यंदि नहीं, तो वह किस राहत को हंकदार है ?

सं० म्रों०वि०/म्रम्बाला/193-83/24009.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. म्रोरियन्टल सर्विस म्रोनेटर्स वर्कणाप, भ्रम्वाला छावनी के श्रमिक श्री भिव राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है ;

मीर वृंति हरियामा के राज्याल विवाद की स्थायनिर्मय हेतु निविच्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, ओद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 16 की उपधारों (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 3(44)-84-3%म, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अप न्यायालय, प्रम्बालं, को विवादप्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमंख के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुग्नंगत ध्रयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री शिव राम की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हंकदार है ?

सं. घो.वि./ग्रम्बाला/193-83/24015.—चूंकि श्रीयाणा के राज्यपाल की राय है कि में. म्रोरियन्टल सर्विस भ्राप्रेटस वर्कणाप, ग्रम्बाला केंट्र, के श्रीमक श्री भगवती प्रसाद तथा उसके प्रयम्बकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्लिस मामले भीकोगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय संमझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद प्रधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं कित्यों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 3(44) 84-3 श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादप्रस्त मा उससे सम्बन्धित नीचे किंखा मामसा न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि चक्त प्रबन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद में मुसंगत प्रयवा सम्बन्धित मामसा है:—

क्या श्री भगवती प्रसाद की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हर्कदार है 🏃

सं. थ्रो.वि./ग्रम्वाला/ 193-83/24021.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. श्रीरियन्टल साईस धप्रेटसं वर्कशाप ग्रम्वाला केंट के श्रमिक श्री सतीश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कीई श्रीकोणिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय संगंधते हैं;

इसलिए, घव, घोडोपिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके इहारा सरकारी प्रधिनुषना सं. 3(44)84-3श्रम, दिनीक 18 प्रप्रेस, 1984, द्वारा उसते अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित यम न्यायालय, प्रस्वाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे खिला भामला न्यायिनग्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं, भी कि उनत प्रजन्मकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत प्रयंता इंबंधित गामला है :---

क्या श्री संतीश कुमार की सेवामी का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है।